शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०३-२०१९

वर्ष - ३० अंक - ३ मार्च २०१९ विक्रम संवत् २०७५ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

सौगंध मुझे है मिट्टी की, मैं देश नहीं मिटने दूंगा।
मैं देश नहीं रुकने दूंगा, मैं देश नहीं झुकने दूंगा।
मेरा वचन है भारत माँ को, तेरा शीश नहीं झुकने दूंगा।

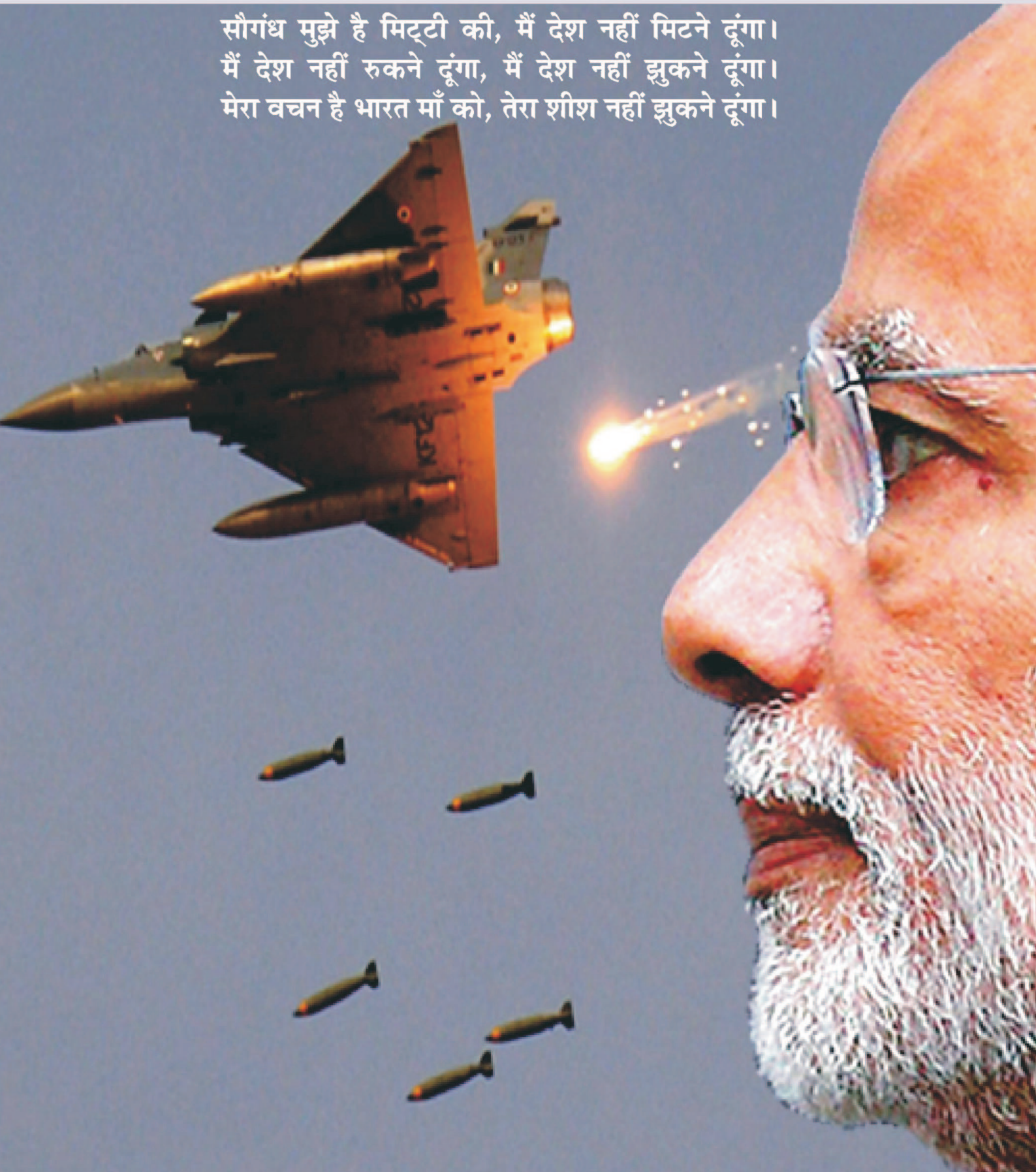

प्रयागराज कुम्भ मेला में आस्था के संगम तट पर विराट जनसमूह

राजिम माघी पुन्नी मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिला मवाना (मेरठ प्रान्त) में शाखा-उमंगोत्सव

मातृ सम्मेलन, सरस्वती उच्च. माध्य. विद्यालय, अर्जुनी, जि. बलौदाबाजार (छ.ग.)

सुभाषित

एकोऽहमसहायोऽहं कृशोऽहमपरिच्छदः।
स्वप्नेऽप्येवंविधा चिन्ता मृगेन्द्रस्य न जायते।।

अर्थात्– ''मैं अकेला हूँ, असहाय हूँ, निर्बल हूँ, परिवार रहित हूँ'' ऐसी चिन्ता सिंह को सपने में भी नहीं होती है।

संपादकीय

गत 26 फरवरी 2019 को प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में भारतीय वायुसेना के जांबाज जवानों ने नया इतिहास रच दिया है। दुनिया के इतिहास की सबसे बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक करके भारतीय वायुसेना के मिराज लड़ाकू विमानों ने पाकिस्तान की सीमा के 40 मील अंदर घुसकर जैश ए मोहम्मद के उस आतंकी ठिकाने को तबाह कर दिया है, जहां से आतंक का प्रशिक्षण लेकर पाकिस्तानी दहशतगर्द भारत समेत संसार के कई देशों में आतंकी हमलों को अंजाम दे रहे थे।

भारत द्वारा किए गए इस हमले में बालाकोट (पाकिस्तान) स्थित जैश ए मोहम्मद के ठिकाने का संचालन करने वाले सभी आतंकी कमांडरों और शिक्षा देने वाले पाकिस्तानी सैन्य अफसरों समेत 300 से ज्यादा दहशतगर्द भून डाले गए। पाकिस्तान के इस खैबर- पख्तूनवा इलाके में लगे हुए पाकिस्तान के राडार और हवाई सेना के जवान और कमांडर सबकी आंखों में धूल झौंक कर भारत के लड़ाकू जहाजों ने दहशतगर्दी के सबसे बड़े अड्डे पर झपटा मारकर पुलवामा हमले का न केवल बदला ही लिया अपितु भविष्य में पाकिस्तान को दुनिया के नक्शे से मिटा देने का बिगुल भी बजा दिया।

भारत ने पाकिस्तान समेत सारी दुनिया में दहशतगर्द मुल्क के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कार्यवाही करके ऐलान कर दिया है कि पाकिस्तान की बर्बादी तक जंग जारी रहेगी।

ए महिना के तिहार

ए महिना के तिहार मन म महाशिवरात्रि चार तारीक के परिही। होलिका दहन बीस तारीक के हवय। ओखर बाद दूसर दिन इक्कीस तारीक के रंग गुलाल खेलबो। रंग पंचमी पच्चीस तारीक के मनाए जाही। महिना के पहिली एकादसी (विजया) दू तारीक के अऊ दूसर एकादसी (आमलकी) सतरा तारीक के परिही।

विजया एकादशी	**फाल्गुन कृ. 11**	**02 मार्च**
महाशिवरात्रि	**फाल्गुन कृ. 13**	**04 मार्च**
आमलकी एकादशी	**फाल्गुन शु. 11**	**17 मार्च**
होलिका दहन	**फाल्गुन शु. 15**	**20 मार्च**
होली (धुरेड़ी)	**चैत्र कृ. 01**	**21 मार्च**
रंग पंचमी	**चैत्र कृ. 05**	**25 मार्च**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग जमशेदजी टाटा के जयंती तीन तारीक के हवय। सरोजनी नायडू के पुण्यतिथि दू तारीक, गोविन्द वल्लभ पन्त के सात तारीक, रानी अवंतीबाई लोधी के बीस तारीक, गणेश शंकर विद्यार्थी के पच्चीस तारीक के पुण्यतिथि घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म चार तारीक के राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस, आठ तारीक के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, पन्द्रह तारीक के विश्व उपभोक्ता दिवस, इक्कीस तारीक के विश्व वानिकी दिवस, बाईस तारीक के विश्व जल संरक्षण दिवस अऊ चौबीस तारीक के विश्व क्षय रोग निवारण दिवस मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार – जय माँ भारती।

प्रयागराज में प्रधानमंत्री ने जिनके पैर धोए, उनमें छत्तीसगढ़ की ज्योति भी शामिल

कोरबा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रयागराज में कुंभ के दौरान जिन पांच सफाई कर्मियों के पैर धोए थे, उनमें एक कोरबा की महिला भी शामिल है। महिला सफाई कर्मी ज्योति उर्फ अंजू (25 वर्ष) छत्तीसगढ़ के कोरबा के गेरवाघाट बस्ती की रहने वाली है। उसका कहना है कि, यह सम्मान पाकर वह अभिभूत है और उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि, उनका प्रधानमंत्री ऐसा सम्मान करेंगे। हम इतना गर्व महसूस करेंगे, इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी।

ज्योति ने बताया कि, प्रधानमंत्री ने हमारे काम की सराहना करते हुए कहा कि, ''आपने अच्छा काम किया। मेला स्वच्छ रहा, कहीं गंदगी नहीं मिली।'' कुंभ के मेले में इन दिनों वह अपने परिवार के साथ मिल कर सफाई कार्य में हाथ बंटा रही है।

प्रेरक प्रसंग

विश्व प्रेम

स्वामी दयानन्द ने फर्रुखाबाद में गंगा के किनारे एक झोपड़ी में अपना डेरा डाला था। कैलाश नामक एक युवक की उन पर बड़ी श्रद्धा थी। एक दिन वह उनके पास आया और उसने अंदर आने की अनुमति माँगी।

स्वामी दयानन्द हँसते हुए बोले, ''यदि कैलाश इस छोटे से झोपड़े में प्रवेश कर सकता है तो उसे अवश्य आना चाहिए।''

अन्दर आते ही वह बोला, ''स्वामीजी! आज मैं आपके पास किसी खास उद्देश्य से आया हूँ। बात यह है कि मेरे मन में रह-रहकर यह विचार उठता है कि इतनी साधना करने के बाद जब आप मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो गये हैं, तब फिर आप इस संसार की चिन्ता क्यों करते हैं ?''

प्रश्न सुनकर स्वामीजी मुस्कुरा कर बोले, ''कैलाश! यह भी कोई प्रश्न है ? जब मुझे साफ-साफ दिखाई दे रहा है कि संसार में जहाँ-तहाँ अशान्ति है, यह अश्रु-सागर में डूब रहा है, दु:खों की अग्नि में झुलस रहा है, अत्याचारों से त्रस्त है, तब भला ऐसी स्थिति में उसे नजर अन्दाज कैसे कर सकता हूँ ? मैं मोक्ष-प्राप्ति का इच्छुक नहीं हूँ, न ही शान्तिपूर्वक मुक्ति चाहता हूँ। मैं मुक्त होऊँगा, तो सबको साथ लेकर, अन्यथा मुझे मुक्ति नहीं चाहिए। कैलाश! इसे अच्छी तरह समझ लो कि जो सच्चे हृदय से जनार्दन से प्यार करना चाहता है, उसे चाहिए कि वह जनता से जो कि जनार्दन की ही कृति है, पहले प्यार करे, तभी जनार्दन का प्यार उसे मिलेगा।''

हमारी सनातन परंपरा में शामिल है महिलाओं का सम्मान

— पूनम नेगी

कुंभ और अर्द्धकुंभ में अखाड़ों की पेशवाई और शाही स्नान का एक अलग ही आकर्षण रहा है। वर्तमान में शैव, वैष्णव और उदासीन पंथ के संन्यासियों के मान्यता प्राप्त 13 अखाड़े हैं— इनमें से सात शैव अखाड़े हैं— जूना, निरंजनी, महानिर्वाणी, अटल, आह्वान, आनंद और अग्नि। तीन वैष्णव हैं— दिगंबर, निर्वाणी और निर्मोही तथा तीन उदासीन अखाड़े— बड़ा उदासीन, नया उदासीन और निर्मल। इन अखाड़ों की प्रतिनिधि समन्वयक संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि कहते हैं कि ये अखाड़े सनातन धर्म की रीढ़ हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए इनकी बुनियाद सैकड़ों वर्ष पूर्व रखी थी।

प्रयाग कुंभ में बीते दिनों केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति को शैव परम्परा के श्री पंचायती तपोनिधि निरंजनी अखाड़े का महामंडलेश्वर बनाया गया है। वे इसी के साथ इस अखाड़े की 16वीं महिला महामंडलेश्वर बन गयी। निरंजनी अखाड़े में संतोषी गिरि, मां अमृतामयी, योग शक्ति सहित 15 महिला महामंडलेश्वर पहले से हैं। महामंडलेश्वर बनने के बाद उन्होंने मकर संक्रांति पर पहले शाही स्नान में भी हिस्सा लिया। जूना अखाड़े की महामंडलेश्वर चेतना माता का कहना है कि बीते कुछ सालों से अखाड़ों में महिला संन्यासियों की संख्या तेजी से बढ़ना, इस बात का संकेत है कि हमारी मातृशक्ति अपने वैदिक कालीन गौरव को पुनर्जीवित करने की दिशा में तेजी से सक्रिय हो रही है। उनके कथनानुसार कि नारी शक्ति हमेशा महान रही है। हमारे वैदिक वांड्मय में जिस आर्य संस्कृति का गुणगान मिलता है, वह मूलत: मातृ सत्तात्मक ही है। वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण, गरिमामय, उच्च स्थान प्रदान करते हैं। भारतीय धर्म को छोड़कर विश्व का कोई भी धर्म स्त्री को इतनी अधिक प्रधानता नहीं देता। वैदिक काल में नारियां स्वतंत्र रुप से ब्रह्मचर्चाओं, शास्त्रार्थ व यज्ञों में भाग लेती थीं। उपनयन संस्कार के बाद शिष्य और शिष्याएं दोनों वेद और शास्त्रों का अध्ययन करते थे तथा शिक्षा पूर्ण होने पर सामान्य छात्र-छात्राएं विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर लेते थे, जबकि कुछ आजीवन तपोमय जीवन व्यतीत करते थे। वेदों में नारी को ज्ञान देने वाली, सुख-समृद्धि लाने वाली, देवी, विदुषी, सरस्वती, इन्द्राणी व उषा इत्यादि आदरसूचक नाम से संबोधित किया गया है।

महामंडलेश्वर श्रद्धा माता कहती हैं कि महिलाओं के संन्यासी बनने की राह आसान नहीं होती। जन सामान्य के मन में हमारे बारे में जानने की भारी उत्सुकता रहती है। संन्यासिनों को अखाड़े में माता की पदवी पाने के लिए 12 से 15 वर्ष तक कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। दीक्षा से पूर्व संन्यासिनों को खुद अपना पिंड तर्पण व मुंडन करना पड़ता है ताकि यह साबित किया जा सके कि अब उसका अपने परिवार और समाज से कोई संबंध व मोह नहीं है। उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य सिर्फ भगवद् भक्ति व जनकल्याण है।

इस कठिन तपश्चर्या के बाद जब गुरु को यह बोध हो जाता है कि साधिका इस पथ पर चलने की पात्रता खुद में विकसित कर चुकी है, तभी उसे संन्यास की दीक्षा दी जाती है। पुरुषों की तरह ही अखाड़ों की महिला संन्यासियों के लिए भी अखाड़े के नियम निर्धारित हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य होता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पालखेड़ का ऐतिहासिक संग्राम - बाजीराव पेशवा (प्रथम)

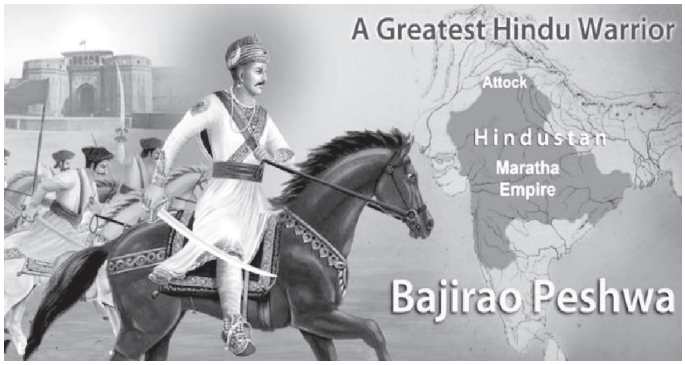

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रसिद्ध सेनानायक फील्ड मार्शल मांटगुमरी ने युद्धशास्त्र पर आधारित अपनी पुस्तक 'ए कन्साइस हिस्ट्री ऑफ वारफेयर' में विश्व के सात प्रमुख युद्धों की चर्चा की है। इसमें एक युद्ध पालखेड़ (कर्नाटक) का है, जिसमें 27 वर्षीय बाजीराव पेशवा (प्रथम) ने संख्या व शक्ति में अपने से दुगनी से भी अधिक निजाम हैदराबाद की सेना को हराया था। बाजीराव (प्रथम) शिवाजी के पौत्र छत्रपति शाहूजी के प्रधानमंत्री (पेशवा) थे। उनके पिता बालाजी विश्वनाथ भी पेशवा ही थे। उनकी असामयिक मृत्यु के बाद मात्र 20 वर्ष की अवस्था में ही बाजीराव को पेशवा बना दिया गया।

बाजीराव का देहांत भी केवल 40 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था, पर पेशवा बनने के बाद उन्होंने जितने भी युद्ध लड़े, किसी में भी उन्हें असफलता नहीं मिली। इस कारण हिन्दू सेना व जनता के मनोबल में अतीव वृद्धि हुई। औरंगाबाद के पश्चिम तथा वैजापुर के पूर्व में स्थित पालखेड़ गांव में 25 फरवरी, 1728 को यह युद्ध हुआ था। पालखेड़ चारों ओर से छोटी-बड़ी पहाड़ियों से घिरा है। निजाम के पास विशाल तोपखाना था, पर बाजीराव के पास एक ही दिन में 75 किमी तक चलकर धावा बोलने वाली घुड़सवारों की विश्वस्त टोली थी।

जिस प्रकार शिकारी चतुराई से शिकार को चारों ओर से घेरकर अपने कब्जे में लेता है, उसी प्रकार बाजीराव ने निजाम की सैन्य शक्ति तथा पालखेड़ की भौगोलिक स्थिति का गहन अध्ययन किया। जब उसे निजाम की सेना के प्रस्थान का समाचार मिला, तो वह बेटावद में था। उसने कासारबारी की पहाड़ियों से होकर औरंगाबाद जाने का नाटक किया। इससे निजाम की सेना भ्रम में पड़ गयी पर अचानक बाजीराव ने रास्ता बदलकर दक्षिण का मार्ग लिया और पालखेड़ की पहाड़ियों में डेरा डाल दिया।

इसके बाद उसने पहले से रणनीति बनाकर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की और निजाम की सेना को इस मैदान में आने को मजबूर कर दिया। निजाम के पास तोपों का विशाल बेड़ा था। पर घाटी संकरी होने के कारण वे तोपें यहां आ ही नहीं सकीं। परिणाम यह हुआ कि जितनी सेना घाटी में आ गयी, बाजीराव ने उसे चारों ओर से घेरकर उसकी रसद पानी बंद कर दी। सैनिक ही नहीं, तो उनके घोड़े भी भोजन और पानी के अभाव में मरने लगे।

यह हालत देखकर निजाम को दांतों तले पसीना आ गया और उसे घुटनों के बल झुककर संधि करनी पड़ी। छह मार्च, 1728 को हुई यह संधि 'शेवगांव की संधि' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि से पूर्व बाजीराव ने जमानत के तौर पर निजाम के दो प्रमुख कर्मचारियों को अपने पास बंदी रखा। संधि के अनुसार अक्कलकोट, खेड, तलेगांव, बारामती, इंदापुर, नारायणगढ़ तथा पूना आदि जो स्थान किसी समय मराठा साम्राज्य में थे, वे सब फिर से मराठों के अधिकार में आ गये। इसी प्रकार दक्षिण के सरदेशमुखी की सनद व स्वराज्य की सनद भी निजाम ने संधि के अनुसार मराठों को सौंप दी।

परन्तु दुर्भाग्यवश छत्रपति शाहू जी कमजोर दिल के प्रशासक थे। वे बाजीराव जैसे अजेय सेनापति के होते हुए भी मुसलमानों से मिलकर ही चलना चाहते थे। उन्होंने बाजीराव को संदेश भेजा कि निजाम को समूल नष्ट न किया जाए और उसका अत्यधिक अपमान भी न करें। इसका परिणाम यह हुआ कि 1818 में पेशवाई तो समाप्त हो गयी। पर अंग्रेजों की सहायता से निजाम फिर शक्तिशाली हो गया और देश की स्वाधीनता के बाद गृहमंत्री सरदार पटेल के साहसी कदम से 1948 में ही उसका पराभव हुआ।

आज हर दिल में देशभक्ति की ज्वाला धधक रही है

— डॉ. नीलम महेंद्र

यह सेना की बहुत बड़ी सफलता है कि उसने पुलवामा हमले के मास्टरमाइंड अब्दुल रशीद गाज़ी को आखिरकार मार गिराया, हालांकि इस ऑपरेशन में एक मेजर सहित हमारे चार जांबाज़ सिपाही वीरगति को प्राप्त हुए। देश इस समय बेहद कठिन दौर से गुजर रहा है क्योंकि हमारे सैनिकों की शहादत का सिलसिला लगातार जारी है। अभी भारत अपने 40 वीर सपूतों को धधकते दिल और नम आँखों से अंतिम विदाई दे भी नहीं पाया था, सेना अभी अपने इन वीरों के बलिदान को ठीक से नमन भी नहीं कर पाई थी, राष्ट्र अपने भीतर के घुटन भरे आक्रोश से उबर भी नहीं पाया था कि, 18 फरवरी की सुबह फिर हमारे पांच जवानों की शहादत की एक और मनहूस खबर आई।

पुलवामा की इस हृदयविदारक घटना में सबसे अधिक पीड़ादायक बात यह है कि वो 40 सीआरपीएफ के जवान किसी युद्ध के लिए नहीं गए थे। वे तो छुट्टियों के बाद अपनी अपनी डयूटी पर लौट रहे थे। ''जिहाद'' की खातिर एक आत्मघाती हमलावर ने सेना के काफिले पर इस फियादीन हमले को अंजाम दिया। हैवानियत की पराकाष्ठा देखिए कि पाक पोषित आतंकवादी संगठन जैश ए मोहम्मद न सिर्फ हमले की जिम्मेदारी लेता है, बल्कि उस सुसाइड बॉम्बर का हमले के लिए जाने से पहले का एक वीडियो भी रिलीज करता है। इंसानियत का इससे घिनौना चेहरा क्या हो सकता है। इससे किसे क्या हासिल हुआ कहना मुश्किल है। लेकिन इस घटना ने इतना तो साबित कर ही दिया कि बिना स्थानीय मदद के ऐसी किसी वारदात को अंजाम देना संभव नहीं था। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस वीभत्सता में कश्मीरियत जम्हूरियत और इंसानियत ने कब का दम तोड़ दिया है। वो घाटी जो जन्नत हुआ करती थी, आज केसर से नहीं लहू से लाल है। वो कश्मीर जो अपनी सूफी संस्कृति के लिए जाना जाता था, आज आतंक का पर्याय बन चुका है।

घाटी में आतंक का ये सिलसिला जो 1987 से शुरु हुआ था वो अब निर्णायक दौर में है। देश के प्रधानमंत्री ने कहा है कि जवानों के खून की एक एक बूंद और हर आंख से गिरने वाले एक एक आँसू का ऐसा बदला लिया जाएगा कि विश्व इस नए भारत को महसूस करेगा।

ये वाकई में एक नया भारत है, जिसमें आज हर दिल में देशभक्ति की ज्वाला धधक रही है। यह एक अघोषित युद्ध का वो दौर है, जिसमें हर व्यक्ति देश हित में अपना योगदान देने के लिए बेचैन है। कोई शहीदों के बच्चों की पढ़ाई की जिम्मेदारी ले रहा है तो कोईअपनी एक महीने की तनख्वाह दे रहा है। स्थिति यह है कि ''भारत के वीर'' में मात्र दो दिन में 6 करोड़ से ज्यादा की राशि जमा हो गई। आज देश की मन:स्थिति का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश का बच्चा बच्चा और महिलाएं तक कह रही हैं कि हमें सीमा पर जाने दो हम पाकिस्तान से बदला लेने को बेताब हैं। देश अब पाकिस्तान से बातचीत नहीं बदला चाहता है।

यह नए भारत की ताकत ही है कि कश्मीर के अलगाववादी नेताओं को मिलने वाली सुरक्षा और सुविधाओं के छीने जाने पर फारुख अब्दुल्लाह और महबूबा मुफ्ती जैसे घाटी के नेता शांत हैं। और नए भारत की यह ताकत सिर्फ देश में ही नहीं दुनिया में भी दिखाई दी। जब आतंकवाद की इस घटना पर विश्व के 48 देशों ने भारत को समर्थन दिया। अमेरिका से लेकर रुस ने कहा कि भारत को आत्मरक्षा का अधिकार है और वे भारत के साथ हैं।

समय है देश विरोधियों के चेहरे से नकाब उतारने का

पुलवामा की आतंकवादी घटना के बाद से जिस प्रकार के कदम हमारी सरकार राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठा रही है उससे ना सिर्फ देश में एक सकारात्मक माहौल उत्पन्न हुआ है बल्कि इन ठोस कदमों ने हमारे सुरक्षा बलों के मनोबल को भी ऊंचा किया है। लेकिन यह खेद का विषय है कि सरकार के जिन प्रयासों का स्वागत पूरा देश कर रहा है उनका विरोध देश की सबसे पुरानी राजनैतिक पार्टी कांग्रेस समेत जम्मू कश्मीर के स्थानीय विपक्षी दल कर रहे हैं। काश कि ये समझ पाते कि इनका गैर जिम्मेदाराना और सरकार विरोधी आचरण देश विरोध की सीमा तक जा पहुंचा है। क्योंकि अपने राजनैतिक हितों के चलते इन लोगों ने कश्मीर समस्या को और उलझाने का ही काम किया है।

पाक परस्ती के चलते जो लोग यह कहते हैं कि युद्ध किसी समस्या का विकल्प नहीं होता उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि युद्ध किसी समस्या का पहला विकल्प नहीं होता लेकिन अंतिम उपाय और एकमात्र समाधान अवश्य होता है। श्री कृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र की भूमि पर गीता का ज्ञान देकर महाभारत के युद्ध को धर्म सम्मत बताया था। और जो लोग यह कहते हैं कि 1947 से लेकर आज तक कश्मीर के कारण भारत और पाकिस्तान में कई युद्ध हो चुके हैं तो क्या हुआ? तो उनके लिए यह जानना आवश्यक है कि हर युद्ध में हमारी सैन्य विजय हुई लेकिन राजनैतिक हार। हर युद्ध में हम अपनी सैन्य क्षमता के बल पर किसी न किसी नतीजे पर पहुंचने के करीब होते थे लेकिन हमारे राजनैतिक नेतृत्व हमें किसी नतीजे पर पहुंचा नहीं पाए। यह वाकई में शर्म की बात है कि हर बार हमारी सेनाओं द्वारा पाकिस्तान को कड़ी शिकस्त देने के बावजूद हमारी सरकारें कश्मीर समस्या का हल नहीं निकाल पाईं। हर बार दुश्मन से सैन्य मोर्चे पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद भी हम राजनैतिक और कूटनीतिक मोर्चे पर विफल रहे, 1948 में जब हमारी सेनाएँ पाक फौज को लगातार पीछे खदेड़ने में कामयाब होती जा रही थीं तो कश्मीर मामले को संयुक्तराष्ट्र क्यों ले जाया गया? क्यों 1965 में हमें भारतीय सेना द्वारा पाक का जीता हुआ भू भाग वापस करना पड़ा। 1971 में जब पाक ने अपनी पराजय स्वीकार करी थी और भारतीय सेना के समक्ष 90000 हज़ार पाक सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया था तब संपूर्ण कश्मीर लेकर उसका स्थाई समाधान ना करके शिमला समझौता क्यों किया गया?

कारण जो भी रहा हो लेकिन कहना गलत नहीं होगा कि हमारे द्वारा इतिहास में की गईं कुछ गलतियों की सज़ा पूरा देश आज तक भुगत रहा है खासतौर पर हमारी सेनाएँ और उनके परिवार। पहले जो पाकिस्तान आमने सामने से युद्ध करता था, अब आतंकवादियों के सहारे छिप कर वार करता है। लेकिन इस बार भारत का नेतृत्व इस मुद्दे पर आरपार की निर्णायक लड़ाई के लिए अपनी इच्छा शक्ति जता चुका है जिसका स्वागत पूरे देश ने किया। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि आज जब देश की हर जुबाँ पर पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब देने की बात है तो महबूबा पाकिस्तान से बातचीत की वकालत करती हैं। जब घाटी में अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले अलगाववादी नेताओं को गिरफ्तार किया जाता है तो वो विरोध करती हैं। 35ए और 370 की बात आती है तो विरोध करती हैं। दरसअल इस प्रकार के नेता और उनके राजनैतिक स्वार्थ ही कश्मीर की समस्या के मूल में हैं। जब हमारे सैनिक इनकी रक्षा में शहीद होते हैं तब ये लोग

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राम मंदिर निर्माण मामले में केन्द्र सरकार का बड़ा कदम

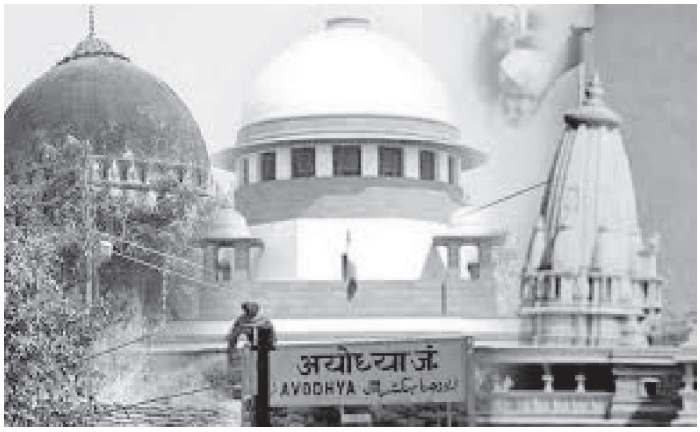

नई दिल्ली। राम मंदिर निर्माण मामले में केन्द्र सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। मामले में केन्द्र सरकार भी सर्वोच्च न्यायालय में पहुंच गई है। केन्द्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करते हुए अयोध्या विवाद मामले में विवादित जमीन छोड़कर बाकी जमीन को लौटाने और इस पर जारी यथास्थिति हटाने की मांग की है। सरकार ने 67 एकड़ जमीन में से कुछ हिस्सा सौंपने की अर्जी दी है ताकि गैर विवादित जमीन पर मंदिर निर्माण शुरु हो सके।

उल्लेखनीय है कि मामले में .313 एकड़ भूमि को लेकर विवाद है, जिसमें सीता रसोई और रामलला जहां पर वर्तमान में विराजमान हैं। सरकार के कदम का विश्व हिन्दू परिषद् ने भी स्वागत किया। विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने सरकार के कदम का समर्थन किया है।

67 एकड़ जमीन 2.67 एकड़ विवादित जमीन के चारों ओर स्थित है। सुप्रीम कोर्ट ने विवादित जमीन सहित 67 एकड़ जमीन पर यथास्थिति बनाने को कहा था। 1993 में केन्द्र सरकार ने अयोध्या अधिग्रहण एक्ट के तहत विवादित स्थल और आसपास की जमीन का अधिग्रहण कर लिया था और पहले से जमीन विवाद को लेकर दाखिल तमाम याचिकाओं को खत्म कर दिया था। एक्ट को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने इस्माइल फारुखी जजमेंट में 1994 में तमाम दावेदारी वाले सूट (अर्जी) को बहाल कर दिया था और जमीन केंद्र सरकार के पास ही रखने का निर्देश दिया था।

विवाद में मुस्लिम पक्ष के वकील जफरयाब जिलानी का कहना था कि जब अयोध्या अधिग्रहण एक्ट 1993 में लाया गया, तब उसे चुनौती दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने तब यह व्यवस्था दी थी कि एक्ट लाकर सूट को खत्म करना गैर संवैधानिक है। पहले अदालत सूट पर फैसला ले और जमीन को केन्द्र तब तक कस्टोडियन की तरह अपने पास रखे। कोर्ट का फैसला जिसके भी पक्ष में आए, सरकार उसे जमीन सुपुर्द करे।

जेकेएलएफ के यासीन मलिक सहित जमात-ए-इस्लामी के दर्जनों अलगाववादी नेता गिरफ्तार

जम्मू-कश्मीर। सुरक्षा वापस लेने के बाद सरकार ने अलगाववादियों को जेल में भरना शुरु कर दिया है। जिसके चलते बीती रात कश्मीर में अफवाहों का बाजार गरम रहा। बीती रात पुलिस ने सबसे पहले जेकेएलएफ चीफ यासीन मलिक को गिरफ्तार किया। कश्मीर में अफवाह उड़ाई गयी कि अनुच्छेद 35ए को अध्यादेश से हटाने की तैयारी चल रही है। उमर अब्दुल्ला ने भी अफवाहों पर एक ट्वीट कर मामला और संवेदनशील कर दिया, हालांकि उमर अबदुल्ला ने ट्वीट तुरंत डिलीट भी कर दिया। लेकिन इसके बाद पुलिस ने जमात-ए-इस्लामी के नेताओं को हिरासत में लेना शुरु किया। रात भर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

संघ का कार्य समाज को संगठित करने का है

— शशिकांत दीक्षित

मुजफ्फरनगर। राजकीय इण्टर कॉलेज के मैदान में आयोजित उमंगोत्सव कार्यक्रम में मुख्य वक्ता क्षेत्र कार्यवाह शशिकांत दीक्षित ने कहा कि डॉ. हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रुप में जो समाज जागरण की निरन्तर चलने वाली पद्धति दी थी, आज उसकी 80 हजार शाखाएं पूरे देश में हिन्दू समाज को संगठित करने का कार्य कर रही हैं। डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि शाखा के माध्यम से समाज जागरण का रास्ता लम्बा हो सकता है, लेकिन यही एकमात्र साधन है। संघ की शाखाएं यदि ठीक प्रकार से लगेंगी तो समाज में सकारात्मक संदेश जाएगा।

उन्होंने कहा कि संघ समय और परिस्थिति के अनुसार अपनी संरचना में अनेक बदलाव करता रहा है। परन्तु अपने हिन्दू संगठन के मूल उद्देश्य से नहीं डिगा है। हिन्दू संगठन का तंत्र है – नित्य प्रति लगने वाली एक घंटे की शाखा। इस शाखा से ही निर्माण होने वाले स्वयंसेवकों ने राष्ट्र पर आने वाले संकटों में सबसे आगे बढ़कर सहयोग किया है। संघ का स्वयंसेवक वनवासी, पर्वतवासी या पिछड़े क्षेत्र सभी जगह अपने सेवा कार्यों से समाज की उन्नति के लिये कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मेरठ प्रान्त में 27 जनवरी को सभी जिलों एवं महानगरों में शाखा उमंगोत्सव के कार्यक्रम आयोजित किये। जिसमें जिलों एवं महानगरों में एक या दो स्थानों पर सभी शाखाएं लगायी गईं। इस अवसर पर पूरे प्रान्त में 55 स्थानों पर 2102 शाखाएं लगीं, जिनमें 30360 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

(पृष्ठ ७ का शेष)

नेताओं को उनके घरों से हिरासत में लिया गया। इन नेताओं में अमीर अब्दुल हामिद फैयाज़, जमात प्रवक्ता एडवोकेट जाहिद अली, पूर्व सेक्रेटरी जनरल गुलाम कादिर लोन, अनंतनाग जिला चीफ अब्दुर राउफ, पहलगाम से मुदासिर अहमद, डालगाम से अब्दुल सलाम और बख्तावर अहमद, त्राल से मोहम्मद हयात, चडूरा से बिलाल अहमद, चक संग्रन से गुलाम मोहम्मद डार का नाम शामिल है।

ज़्यादातर नेता साउथ कश्मीर से हैं। जहां पर सुरक्षा बलों का विशेष सर्च अभियान जारी है। जमात-ए-इस्लामी कश्मीर का एक बड़ा इस्लामिक संगठन है, जो कश्मीर के ज्यादातर मदरसों और मस्जिदों का संचालन करता है। जमात के नेता 90 के दशक तक अलगाववाद की राजनीति में खुले तौर पर शामिल रहे हैं। लेकिन उसके बाद जमात ने मस्जिदों और मदरसों के जरिये अलगाववाद की तहरीक चला रहे हैं। कश्मीर में कट्टरपंथ का जहर घोलने में सबसे बड़ा हाथ जमात-ए-इस्लामी का ही है।

उधर, केन्द्र सरकार ने जम्मू कश्मीर में अर्धसैनिक बलों की 100 अतिरिक्त कंपनियों की तैनाती के आदेश जारी किए हैं। गृह मंत्रालय की ओर से आदेश जारी हुए हैं। इनमें अर्धसैनिक बलों सीआरपीएफ की 45 कंपनियां, बीएसएफ की 35 तथा आईटीबीपी व एसएसबी की 10-10 कंपनियां शामिल हैं।

अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि पर बाबरी मस्जिद बनने और ढहाई जाने तक का इतिहास

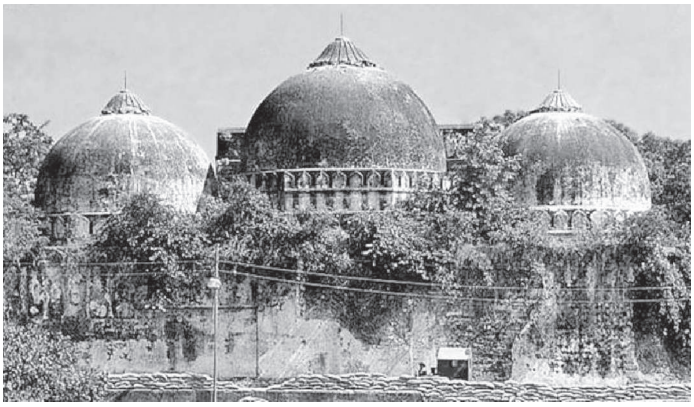

1. भगवान राम का जन्म 5114 ईस्वी पूर्व को उत्तरप्रदेश के अयोध्या नगर में हुआ था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भी अयोध्या में हुआ था। आक्रांताओं के आने के पहले यहां हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म के सैकड़ों मंदिर और स्तूप थे।
2. तथ्य कहते हैं कि विदेशी आक्रांता बाबर के आदेश पर सन् 1527-28 में अयोध्या में राम जन्मभूमि पर बने भव्य राम मंदिर को तोड़कर एक मस्जिद का निर्माण किया गया। कालांतर में बाबरी के नाम पर ही इस मस्जिद का नाम बाबरी मस्जिद रखा।
3. जब मंदिर तोड़ा जा रहा था तब जन्मभूमि मंदिर पर सिद्ध महात्मा श्यामनंदजी महाराज का अधिकार था। उस समय भीटी के राजा महताब सिंह बद्रीनारायण ने मंदिर को बचाने के लिए बाबर की सेना से युद्ध लड़ा। कई दिनों तक युद्ध चला और अंत में हजारों वीर सैनिक शहीद हो गए।
4. इतिहासकार कनिंघम अपने ''लखनऊ गजेटियर'' के 66वें अंक के पृष्ठ 3 पर लिखता है कि 1,74,000 हिन्दुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात मीरबाकी अपने मंदिर ध्वस्त करने के अभियान में सफल हुआ।
5. उस समय अयोध्या से 6 मील की दूरी पर सनेथू नाम के एक गांव के पं. देवीदीन पाण्डेय ने वहां के आसपास के गांवों सराय, सिसिंडा, राजेपुर आदि के सूर्यवंशीय क्षत्रियों को एकत्रित किया और फिर से युद्ध हुआ। पं. देवीदीन पाण्डेय सहित हजारों हिन्दू शहीद हो गए और बाबर की सेना जीत गई।
6. पाण्डेयजी की मृत्यु के 15 दिन बाद हंसवर के महाराज रणविजय सिंह ने सिर्फ हजारों सैनिकों के साथ मीरबाकी की विशाल और शस्त्रों से सुसज्जित सेना से रामलला को मुक्त कराने के लिए आक्रमण किया लेकिन महाराज सहित जन्मभूमि के रक्षार्थ सभी वीरगति को प्राप्त हो गए।
7. स्व. महाराज रणविजय सिंह की पत्नी रानी जयराज कुमारी हंसवर ने अपने पति की वीरगति के बाद खुद जन्मभूमि की रक्षा के कार्य को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया और 3,000 नारियों की सेना लेकर उन्होंने जन्मभूमि पर हमला बोल दिया और हुमायूं के समय तक उन्होंने छापामार युद्ध जारी रखा।
8. स्वामी महेश्वरानंदजी ने संन्यासियों की सेना बनाई। रानी जयराज कुमारी हंसवर के नेतृत्व में यह युद्ध चलता रहा। लेकिन हुमायूं की शाही सेना से इस युद्ध में स्वामी महेश्वरानंद और रानी जयराज कुमारी लड़ते हुए अपनी बची हुई सेना के साथ शहीद हो गई और जन्मभूमि पर पुन: मुगलों का अधिकार हो गया।
9. मुगल शासक अकबर के काल में शाही सेना हर दिन के इन युद्धों से कमजोर हो रही थी अत: अकबर ने बीरबल और टोडरमल के कहने पर खस की टाट से उस चबूतरे पर 3 फीट का एक छोटा-सा मंदिर बनवा दिया। अकबर की इस कूटनीति से कुछ दिनों के लिए जन्मभूमि में रक्त नहीं बहा। यही क्रम शाहजहां के समय भी चलता रहा।
10. फिर औरंगजेब के काल में भयंकर दमनचक्र चलाकर उत्तर भारत से हिन्दुओं के संपूर्ण सफाए का संकल्प

लिया गया। उसने लगभग 10 बार अयोध्या में मंदिरों को तोड़ने का अभियान चलाकर यहां के सभी प्रमुख मंदिरों और उनकी मूर्तियों को तोड़ डाला। औरंगजेब के समय में समर्थ गुरु श्रीरामदासजी महाराज के शिष्य श्रीवैष्णवदासजी ने जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए 30 बार आक्रमण किए।

11. नासिरुद्दीन हैदर के समय में मकरही के राजा के नेतृत्व में जन्मभूमि को पुन: अपने रुप में लाने के लिए हिन्दुओं के 3 आक्रमण हुए जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गए। इस संग्राम में भीती, हंसवर, मकरही, खजूरहट, दीयरा, अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि सम्मिलित थे। हारती हुई हिन्दू सेना के साथ वीर चिमटाधारी साधुओं की सेना आ मिली और इस युद्ध में शाही सेना को हारना पड़ा और जन्मभूमि पर पुन: हिन्दुओं का कब्जा हो गया। लेकिन कुछ दिनों के बाद विशाल शाही सेना ने पुन: जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया और हजारों रामभक्तों का कत्ल कर दिया गया।

12. नवाब वाजिद अली शाह के समय के समय में पुन: हिन्दुओं ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ आक्रमण किया गया। ''फैजाबाद गजेटियर'' में कनिंघम ने लिखा- इस संग्राम में बहुत ही भयंकर खून-खराबा हुआ। 2 दिन और रात होने वाले इस भयंकर युद्ध में सैकड़ों हिन्दुओं के मारे जाने के बावजूद हिन्दुओं ने श्रीराम जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। इतिहासकार कनिंघम लिखता है कि ये अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू-मुस्लिम बलवा था। हिन्दुओं ने अपना सपना पूरा किया और औरंगजेब द्वारा विध्वंस किए गए चबूतरे को फिर वापस बनाया। चबूतरे पर 3 फीट ऊंचे खस के टाट से एक छोटा-सा मंदिर बनवा लिया जिसमें पुन: रामलला की स्थापना की गई। लेकिन बाद के मुगल राजाओं ने इस पर पुन: अधिकार कर लिया।

13. 1853 में हिन्दुओं का आरोप था कि भगवान राम के मंदिर को तोड़कर मस्जिद का निर्माण हुआ। इस मुद्दे पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच पहली हिंसा हुई।

14. इसके बाद सन् 1857 की क्रांति में बहादुरशाह जफर के समय में बाबा रामचरण दास ने एक मौलवी आमिर अली के साथ जन्मभूमि के उद्धार का प्रयास किया। कुछ कट्टरपंथी मुस्लिमों को यह बात स्वीकार नहीं हुई और उनके विरोध के चलते 18 मार्च सन् 1858 को कुबेर टीला स्थित एक इमली के पेड़ में दोनों को एकसाथ अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया।

15. विवाद के चलते 1859 में ब्रिटिश शासकों ने विवादित स्थल पर बाड़ लगा दी और परिसर के भीतरी हिस्से में मुसलमानों को और बाहरी हिस्से में हिन्दुओं को प्रार्थना करने की अनुमति दे दी।

16. 19 जनवरी 1885 को हिन्दू महंत रघुबीर दास ने पहली बार इस मामले को फैजाबाद के न्यायाधीश पं. हरिकिशन के सामने रखा था। इस मामले में कहा गया था कि मस्जिद की जगह पर मंदिर बनवाना चाहिए, क्योंकि वह स्थान प्रभु श्रीराम का जन्म स्थान है।

17. वर्ष 1947 में भारत सरकार ने मुसलमानों को विवादित स्थल से दूर रहने के आदेश दिए और मस्जिद (बाबरी ढांचा) के मुख्य द्वार पर ताला डाल दिया गया जबकि हिन्दू श्रद्धालुओं को एक अलग जगह से प्रवेश दिया जाता रहा।

18. 1949 में भगवान राम की मूर्तियां मस्जिद में पाई गईं। कहते हैं कि कुछ हिन्दूओं ने ये मूर्तियां वहां रखवाई थीं। मुसलमानों ने इस पर विरोध व्यक्त किया और दोनों पक्षों ने अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। सरकार ने इस स्थल को विवादित घोषित करके ताला लगा दिया।

19. 1984 में कुछ हिन्दुओं ने विश्व हिन्दू परिषद के नेतृत्व में भगवान राम के जन्मस्थल को ''मुक्त'' करने और वहां राम मंदिर का निर्माण करने के लिए एक समिति का गठन किया। बाद में इस अभियान का नेतृत्व भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता

लालकृष्ण आडवाणी ने संभाल लिया।

20. 1986 में जिला मजिस्ट्रेट ने हिन्दुओं को प्रार्थना करने के लिए विवादित मस्जिद के दरवाजे पर से ताला खोलने का आदेश दिया। मुसलमानों ने इसके विरोध में बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति का गठन किया।
21. 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने राम मंदिर निर्माण के लिए अभियान तेज किया और विवादित स्थल के नजदीक राम मंदिर की नींव रखी। इसी वर्ष इलाहाबाद उच्च न्यायलय ने आदेश दिया कि विवादित स्थल के मुख्य द्वारों को खोल देना चाहिए और इस जगह को हमेशा के लिए हिन्दुओं को दे देना चाहिए।
22. 30 अक्टूबर 1990 को हजारों रामभक्तों ने मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा खड़ी की गईं अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। लेकिन 2 नवंबर 1990 को मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया जिसमें सैकड़ों रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियां दीं। सरयू तट रामभक्तों की लाशों से पट गया था। इस हत्याकांड के बाद अप्रैल 1991 को उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को इस्तीफा देना पड़ा।
23. इसके बाद लाखों रामभक्त 6 दिसंबर को कारसेवा हेतु अयोध्या पहुंचे। 6 दिसंबर 1992 को बाबरी ढांचा ढहा दिया गया जिसके परिणामस्वरुप देशभर में दंगे हुए। इसी मसले पर विश्व हिन्दू परिषद के श्री अशोक सिंघल, भाजपा नेता आडवाणी, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह, मुरली मनोहर जोशी और मध्यप्रदेश की पूर्व सीएम उमा भारती सहित 13 नेताओं के खिलाफ आपराधिक साजिश का मुकदमा चलाने की मांग की गई थी।

6 दिसंबर 1992 को जब विवादित ढांचा गिराया गया, उस समय राज्य में कल्याण सिंह की सरकार थी। उस दिन सुबह करीब 10.30 बजे हजारों-लाखों की संख्या में कारसेवक पहुंचने लगे। दोपहर में 12 बजे के करीब कारसेवकों का एक बड़ा जत्था मस्जिद की दीवार पर चढ़ने लगता है। लाखों की भीड़ को संभालना सभी के लिए मुश्किल हो गया। दोपहर के 3 बजकर 40 मिनट पर पहला गुंबद भीड़ ने तोड़ दिया और फिर 5 बजने में जब 5 मिनट का वक्त बाकी था तब तक पूरे का पूरा विवादित ढांचा जमींदोज हो चुका था।

भीड़ ने उसी जगह पूजा-अर्चना की और ''राम शिला'' की स्थापना कर दी। पुलिस के आला अधिकारी मामले की गंभीरता को समझ रहे थे। गुंबद के आसपास मौजूद कारसेवकों को रोकने की हिम्मत किसी में नहीं थी। मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का साफ आदेश था कि कारसेवकों पर गोली नहीं चलेगी।

1527-28 ईसवी में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर को तोड़ा था जिसका पंडित देवीदीन पाण्डेय के नेतृत्व में युद्ध के रुप में पहला विरोध किया गया था। तब से लेकर आज तक 77 से अधिक युद्ध और सैकड़ों दंगे हो चुके हैं जिसमें लाखों कारसेवकों की जानें चली गईं। इस पवित्र स्थल हेतु श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज, महारानी राज कुंवर तथा अन्य कई विभूतियों ने भी संघर्ष किया।

संदर्भ—प्राचीन भारत, लखनऊ गजेटियर, लाट राजस्थान, रामजन्मभूमि का इतिहास (आरजी पाण्डेय), अयोध्या का इतिहास (लाला सीताराम), बाबरनामा आदि स्रोतों से संकलित।

(पृष्ठ ३ का शेष)

इन संन्यासिनों को सिर्फ एक भगवा वस्त्र व मस्तक पर तिलक धारण करना होता है। सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्मों के बाद इष्ट का भजन-पूजन व जप तथा दोपहर में एक समय भोजन। भोजनोपरान्त पुनः जप-ध्यान व संध्याकाल में आरती-ध्यान के उपरांत शयन। अखाड़े के सभी साधु-संत उसे माता कहकर सम्बोधित करते हैं।

प्रयागराज कुम्भ में जनजाति समागम का आयोजन

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने 12 से 15 फरवरी 2019 को प्रयागराज के कुम्भ मेला में ''जनजाति समागम'' का आयोजन किया। कल्याण आश्रम के उत्तर प्रदेश के ''सेवा समर्पण संस्थान'' के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में देश भर से 29 प्रान्तों के 141 जिलों से 5 हजार श्रद्धालू उपस्थित रहे।

अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत से लगे तुत्तिंग और म्निगओं से भी कार्यक्रम में श्रद्धालू आए थे। हिमाचल प्रदेश के कई प्रतिनिधियों को इस समागम में भाग लेने हेतु 45 किमी तक बर्फ से ढके पहाड़ों को पार कर आना पड़ा।

हिमाचल से केरल तक और अरुणाचल से गुजरात तक के लगभग 100 जनजाति समुदाय के लोगों का कुम्भ में एकत्रित होना, यह पहली बार हो रहा है।

जनजाति समागम के भव्य आयोजन हेतु अर्जुन दास खत्री (अध्यक्ष), नीरज अगरवाल (मंत्री) एवं मणिराम पाल के नेतृत्व में एक आयोजन समिति का गठन हुआ था। जनजाति समागम के लिए एक प्रदर्शनी भी तैयार की गई थी। प्रदर्शनी में जनजाति समाज के सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक आस्था, जनजातीय वीर-वीरांगना एवं समाज सुधार आदि विषयों पर विवरण के साथ चित्र लगाए हुए थे। इसके अलावा कल्याण आश्रम द्वारा देश भर में चल रहे सेवा और जागरण कार्य का भी सचित्र विवरण दिया गया था।

12 फरवरी को दोपहर 2 बजे पूज्य महामंडलेश्वर श्री रघुनाथदास महाराज के करकमलों से प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। ''जनजाति समागम'' का उद्घाटन दोपहर 3 बजे पूज्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद महाराज ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। पूज्य स्वामी अवधेशानंद ने जनजाति समाज के साथ बस्तर के नारायणपुर में आयोजित सम्मलेन के अनुभव साझा किये। जनजाति समाज की आस्था और संस्कृति सनातन परम्परा का अभिन्न अंग है। इस अवसर पर जनजाति समाज के पूज्य संतों का भी अभिनन्दन किया गया। जगदम्बा मल जी द्वारा लिखित 'रानी गाईदिन्ल्यु' एवं 'नागावीर हाईपाउ जादोनांग' पुस्तकों का विमोचन किया गया।

''इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र'' और ''सेवा समर्पण संस्थान'' के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में 55 लोकनृत्य का प्रदर्शन हुआ।

14 फरवरी को संगम स्नान हेतु शोभायात्रा का आयोजन हुआ। शोभायात्रा का नेतृत्व पूज्य शंकराचार्य वासुदेवानंद जी महाराज ने किया। शोभायात्रा में पूज्य महामहामंडलेश्वर यतीन्द्रनाथ महाराज, रघुनाथ महाराज के अलावा देश भर से आए 169 जनजाति साधु संत एवं धार्मिक नेताओं ने भाग लिया।

(पृष्ठ ६ का शेष)

आतंकवादियों से हथियार छोड़ कर बात करने के लिए क्यों नहीं कहते इसके विपरीत जब हमारी सेना कार्यवाही करने लगती है तो ये बातचीत से मुद्दे का हल निकालने की बात करते हैं। जब हमारी सेनाओं पर पत्थरबाजी होती है तो इन्हें पत्थरबाज भटके हुए बच्चे लगते हैं लेकिन जब अपने बचाव में इन पत्थरबाज़ों पर सेना कोई भी कार्यवाही करती है तो वो इन्हें सेना का अत्याचार दिखाई देता है।

— डॉ. नीलम महेंद्र

कुम्भ पर्वः वैज्ञानिक परम्परा और धर्म संस्कृति का संगम

— चन्द्रशेखर साहू

भारत में कुम्भ पर्व की चिर-पुरातन की परम्परा रही है। जो आज भी नित्य-नूतन स्वरुप में भारतीय मानस का और वैश्विक समुदायों का आस्था एवं आर्कषण का केन्द्र बना हुआ है। चाहे वह 12 वर्ष में एक बार होने वाला महाकुंभ हो अथवा वर्तमान में हो रहे प्रयाग का अर्धकुंभ हो। कुम्भ पर्व स्नान के साथ-साथ जनप्रवाह की धारा को भी प्रवाहित करती है। इसीलिए बिना किसी आमंत्रण के, बिना किसी विज्ञापन के, बिना किसी सरकारी संसाधन के लाखों लोग प्रतिदिन कुम्भ पर्व में शामिल होने और स्नान करने के लिए निरंतर पहुँचते है। मुझे भी इस पर्व में पौष पूर्णिमा जिसे छत्तीसगढ़ में छेरछेरा पुन्नी के रुप में मनाया जाता है इस त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने का सुयोग मिला था। इस दृष्टि से मुझे कुम्भ पर्व के विविधता, दिव्यता और भव्यता को बहुत गौर से देखने को मिला।

मुझे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का कथन भी प्रासंगिक लगता है कि प्रयाग का कुम्भ पर्व आस्था, आध्यात्मकिता और आधुनिकता का त्रिवेणी संगम है। इस कुम्भ पर्व में लगभग 90 देषों में बसे हजारों प्रवासी भारतीयों ने मॉरिशस के प्रधानमंत्री प्रवीन्द जगन्नाथ के साथ स्नान करने का संयोग प्राप्त किया।

भारत के धर्म और संस्कृति अपनी विशिष्टताओं के साथ शाश्वत और सनातन स्वरुप में तो है ही इसके अलावा भी कुम्भ पर्व का वैज्ञानिक अवधारणा को रेखांकित किया जाना सम-सामयिक होगा। इस तारतम्य में प्राचीन एवं अर्वाचीन रुप में पंच तत्व के जल और आने वाले कल के लिए भारतीय चिन्तन को यहां उल्लेखित करुंगा।

कुम्भ अर्थात् एक निश्चित अक्षांश में नदियों के संगम के उपयोग का विज्ञान है, किसी अंधविश्वास की उपज नहीं है। यह विज्ञान विभिन्न शक्तियों से घिरे मानव जीवन के काम करने की प्रवृत्ति और उन शक्तियों का इस्तेमाल की गहरी समझ एवं अवलोकन का परिणाम है। आधुनिक विज्ञान आज इस बात के प्रति जागरुक है की भूमध्य रेखा और 33 डिग्री अक्षांश के बीच धरती की अपकेन्द्री (centrifugal force) शक्ति लम्बरुप (vertical) में कार्य करती है। 11 डिग्री सेंटीग्रेड पर यह शक्ति लम्बवत कोण बनाती है। 11 डिग्री अक्षांश पर ऊर्जा बहुत ही तेजी के साथ ऊपर की ओर जाती है। इसलिए शून्य से 33 डिग्री के बीच का हिस्सा धरती का सबसे पवित्र माना गया है। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक साधना के सबसे ज्यादा परिणाम भी केवल इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को मिले है। इन अक्षांशों के बीच में अध्येताओं ने कई जगहों की खोज की, जहाँ साल के अलग-अलग समय पर और सौर वर्ष के दौरान जो कि साढ़े बारह साल का होता है, ये शक्तियाँ अलग-अलग ढंग से कार्य करती हैं।

कुछ खास जगहों पर अलग-अलग समय के दौरान जहाँ दो बहती जल धाराएँ ताकत के साथ मिलती है, वहाँ जल का एक बवंडर पैदा होता है और ऊर्जा का संचार होता है। एक खास नक्षत्र के दौरान यदि हमारा शरीर जिसका 72 प्रतिशत पानी है, इस संगम का साक्षी बनता है तो हमारे शरीर को सबसे ज्यादा लाभ मिलता है।

प्राचीन काल से लोग इस बात को अच्छे से जानते थे कि 48 दिन का समय जिसे एक मंडल कहा जाता है, इस दौरान अगर कोई व्यक्ति सभी तरह की साधना करते हुए कुम्भ या इस जल के सम्पर्क में रहे तो वह अपने भौतिक शरीर और मन को बदल सकता है और अपनी ऊर्जा को सही दिशाओं में संचालित कर सकता है। लेकिन, आजकल लोग कुम्भ में जाते हैं, दो डुबकी लगाते हैं और वापस चले जाते हैं। हो सकता है कि इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास समय का अभाव हो लेकिन, वे लोग अपने ही घर पर कुम्भ के दौरान लगातार 48 दिन तक दिन में पांच-दस मिनट की साधना कर सकते हैं और आखिर में कुम्भ मेले में आकर स्नान कर सकते हैं।

इससे बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। लेकिन, एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि आपके भीतर उस ऊर्जा को देख पाने और ग्रहण कर पाने की क्षमता होनी चाहिए। यदि आप में वह क्षमता नहीं है तो साधना करने का कोई अर्थ नहीं है। एक विशेष स्थान पर, एक निश्चित समय या नक्षत्र के दौरान स्नान एवं साधना करने के पीछे गहरा विज्ञान है।

हम इतिहास के उस काल में हैं जब सबसे ज्यादा वैचारिक गतिविधियाँ हो रही हैं। यानी दुनिया में आज सबसे ज्यादा लोग खुद के बारे में सोच पा रहे हैं। एक समय ऐसा था जब एक गाँव में लोग केवल एक ही आदमी के निर्देश लेते थे। पर वर्तमान समय में हर आदमी अपने खुद के बारे में सोचने के लिए सक्षम है। सूचना के इस दौर में लोगों को स्वर्ग-नरक की कहानियाँ सुनाकर मूर्ख नहीं बनाया जा सकता है। वह अपनी भलाई के बारे में स्वयं सोचने में सक्षम है। ईश्वर और धर्म के नाम पर लोगों को खूब भ्रमित किया गया है, कई नए युद्ध हुए हैं, जबरदस्त हिंसा लोगों ने एक-दूसरे के साथ की है। मानव जीवन को सुखी और आरामदेह बनाने के लिए हमने पर्यावरण का सर्वनाश किया है। सुख-सुविधा और आराम की दृष्टि से हम सौ साल पहले कहाँ थे और आज हम कहाँ है ? मुझे लगता है कि हमारी पीढ़ी इस दुनिया की सबसे अधिक सुख-सुविधा सम्पन्न पीढ़ी है। लेकिन, क्या हम इस बात का दावा कर सकते हैं कि हम इस दुनिया की सबसे खुश, आनंदपूर्ण और शांतिपूर्ण पीढ़ी हैं? क्या हम भलाई और खुशी जीवन का अर्थ जानने में सक्षम हैं ? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम आर्थिक सम्पन्नता से सुख और सुविधाएं तो जुटा सकते है परंतु वास्तविक मायने में आनंदपूर्ण एवं शांतिपूर्ण जीवन नहीं। यदि आनंदपूर्ण एवं शांतिपूर्ण जीवन पाना है तो एक इंसान का आंतरिक विकास जरुरी है लेकिन इंसान को इसके लिए अपनी पूर्ण ताकत लगानी पड़ेगी। यह धरती, यह देश, यहां का दर्शन व संस्कृति हमेशा जीवन के इन चरम उद्देश्यों के प्रति समर्पित एवं सजग रही है।

छत्तीसगढ़ की वनस्पति का अद्भुत प्रयोग

गोटारन (करंज, लताकरंज)

यह दिव्य वनस्पति सर्वसुलभ हैं। कोढ़, बवासीर, कृमि व कफनाशक होती हैं। इसके पत्तों का उपयोग कफ, वात एवं पित्त सम्बन्धी रोगों की औषधियों में किया जाता हैं। इसके वृक्ष के पत्तों, फूलों, जड़ों व छाल को मशीन में पीसकर पानी के साथ खाने से छायामय रोग (शरीर की त्वचा पर नीले रंग के धब्बे पड़ना) ठीक होता हैं। उत्तर दिशा की ओर फैली शाखा वाले करंज की जड़ को मिश्री तथा दूध के साथ सेवन करने से शरीर को अधिक लाभकारी होता हैं। सफेद रंग को छोड़कर अन्य रंग के करंज के मूल को दूध के साथ लेने से पीलिया रोग रोग ठीक होता हैं।

नीमच गोशाला विधि - मटका खाद

15 किलोग्राम ताजा गोबर, देशी गाय का 15 किलोग्राम गोमूत्र,15 लीटर पानी में मिट्टी के घड़े में घोल लें। इस घोल को मिट्टी के बर्तन में उपर से कपड़ा या टाट व मिट्टी से बन्द कर दें। 4-5 दिन बाद इस घोल में 200 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ खेत में छिड़क दें। यह छिड़काव बोनी के 15 दिन बाद करें। पुन: सात दिन बाद दोहराएं। सामान्य फसल में 3-4 बार और लम्बी अवधि की फसल में जैसे गन्ना, केला, हल्दी में आठ बार छिडकें।

संघ ने अपना एक सच्चा हितचिंतक एवं मित्र खो दिया

— भैयाजी जोशी, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

धर्म और अध्यात्म जगत की महान विभूति परमादरणीय जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्य के ब्रह्मलीन होने का समाचार पाकर मन व्यथित हुआ। 22 फरवरी को प्रयागराज कुंभ से हरिद्वार जाते समय हुई एक भीषण सड़क दुर्घटना में वे इस नश्वर शरीर को त्याग कर परमलोक को सिधार गए। उनका जाना संपूर्ण हिन्दू समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के लिए चल रहे आंदोलन में उनकी महती और अग्रणी भूमिका थी। पू. स्वामी जी अखिल भारतीय संत समिति के अध्यक्ष भी थे। उनके निधन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपना एक सच्चा हितचिंतक एवं मित्र खो दिया है। उन्होंने अपनी ओजस्वपूर्ण वक्तृत्वता से हिन्दू समाज में नया आत्मविश्वास भरने का काम किया। सामाजिक समरसता के वाहक एवं सच्चे राष्ट्रीय नेतृत्व के रुप में स्वामी जी का जीवन और कर्तृत्व हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि पू. स्वामी जी को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और देश विदेश में फैले उनके अनुयायियों सहित हम सभी को इस अतीव कष्ट को सहने का सामर्थ्य प्रदान करें।

सादगी और शुचिता श्री जॉर्ज फर्नांडीस की पहचान थी - भैयाजी जोशी

देश की राजनीति में दशकों तक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले श्री जॉर्ज फर्नांडीस हमारे बीच नहीं रहे।

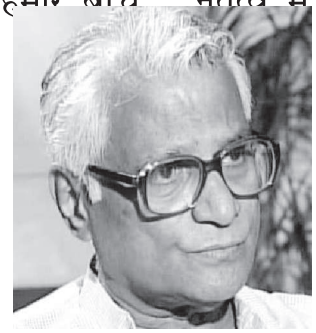

सामाजिक जीवन में सादगी और शुचिता उनकी पहचान थी। आपातकाल का प्रखर विरोध हो, पोखरण में परमाणु विस्फोट हो अथवा करगिल युद्ध हो, साहसिक निर्णय लेना और कुशलता के साथ उन्हें निर्णायक परिणति तक पहुंचाना उनके चरित्र की विशेषता थी।

लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता के साथ साथ सभी विचारधाराओं के लोगों के साथ उनका समन्वय और स्वीकार्यता थी। स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राजग संयोजक की भूमिका में वे परस्पर भिन्न विचारधारा के दलों को कुशलतापूर्वक साथ लेकर चले।

लगभग एक दशक की लंबी बीमारी के बाद मंगलवार 29 जनवरी को प्रातः उन्होंने अंतिम सांस ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उनके निधन को भारतीय राजनीति के लिये एक अपूरणीय क्षति मानता है। उनकी आत्मा को सद्गति एवं शोकसंतप्त परिजनों को धैर्य धारण की क्षमता प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना करता है।

— भैयाजी जोशी, सरकार्यवाह,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

भारत से होकर ही निकलेगा विश्व कल्याण का मार्ग

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने कहा कि देश के विकास में आज सबसे बड़ी बाधा हीनता का भाव है। लोग दूसरे देशों या संस्कृति से खुद को हीन समझने लगे हैं। भारत को जापान, चीन, अमेरिका जैसे दूसरे देशों का अनुकरण करने के बजाय भारत को भारत रहने की आवश्यकता है।

सरकार्यवाह ने आज यहां आयोजित प्रबुद्ध जन संगोष्ठी में ये विचार व्यक्त किए। श्री जोशी ने कहा कि देश के युवाओं में हीनता को छोड़कर संस्कृति, भाषा, विचार आदि के लिए जागरुक करने का संकल्प लेना होगा।

युवा पीढी को समझना होगा कि विश्व कल्याण का मार्ग भारत से होकर ही निकलेगा। उन्होंने कहा कि देश में आज हीनभावना से ग्रस्त होने की चुनौती को दूर करने के लिए परिवार, संगठनों के साथ सभी को प्रयास करने होंगे।

भैयाजी जोशी ने कहा कि दुनिया में ईश्वर के रूप भिन्न है, लेकिन ईश्वर एक है। आज दुनिया ईश्वर के रूपों को लेकर ही संघर्ष कर रही है, जबकि हिंदू जीवन शैली कहती है कि आपस में संघर्ष की जरूरत नहीं है, हम एक होकर चलेंगे यही विश्व कल्याण का मार्ग है।

हमारी संस्कृति में किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं है। शास्त्रीय मान्यता है कि संसार में जो भी बना है वह पंचमहाभूतों से निर्मित हुआ है और उसी में विलीन हो जाएगा। पंचभूतों के बिना दुनिया में कोई भी शक्ति नहीं चल सकती है। संगोष्ठी में विभिन्न क्षेत्रों सेना से सेवानिवृत्त अधिकारी, न्यायिक, प्रशासनिक, सामाजिक, शैक्षिक व व्यवसायिक आदि का नेतृत्व करने वाले प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।

घोषणा-पत्र

रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर (सेंट्रल) नियम के अन्तर्गत नियम-८ (फार्म-४) में निर्देशित मासिक 'शाश्वत राष्ट्रबोध' के स्वामित्व एवं अन्य नियमों से संबंधित विवरण

१. प्रकाशन स्थान	:	शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर (छ.ग.) ४९२००१
२. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३. मुद्रक का नाम	:	नरेन्द्र जैन
(क्या भारत के नागरिक है)	:	हाँ
पता	:	जागृति मंडल, गोविन्द नगर, रायपुर (छ.ग.) ४९२००१
४. प्रकाशक का नाम	:	नरेन्द्र जैन
(क्या भारत के नागरिक है)	:	हाँ
पता	:	जागृति मंडल, गोविन्द नगर, रायपुर (छ.ग.) ४९२००१
५. सम्पादक का नाम	:	नरेन्द्र जैन
(क्या भारत के नागरिक है)	:	हाँ
पता	:	जागृति मंडल, गोविन्द नगर, रायपुर (छ.ग.) ४९२००१
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	नरेन्द्र जैन जागृति मंडल, गोविन्द नगर, रायपुर (छ.ग.) ४९२००१

मैं, नरेन्द्र जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

दिनांक ०१/०३/२०१९

नरेन्द्र जैन
(प्रकाशक)

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

राष्ट्र जागरण में सहयोग करें
राष्ट्रीय साहित्य उपहार में दें...

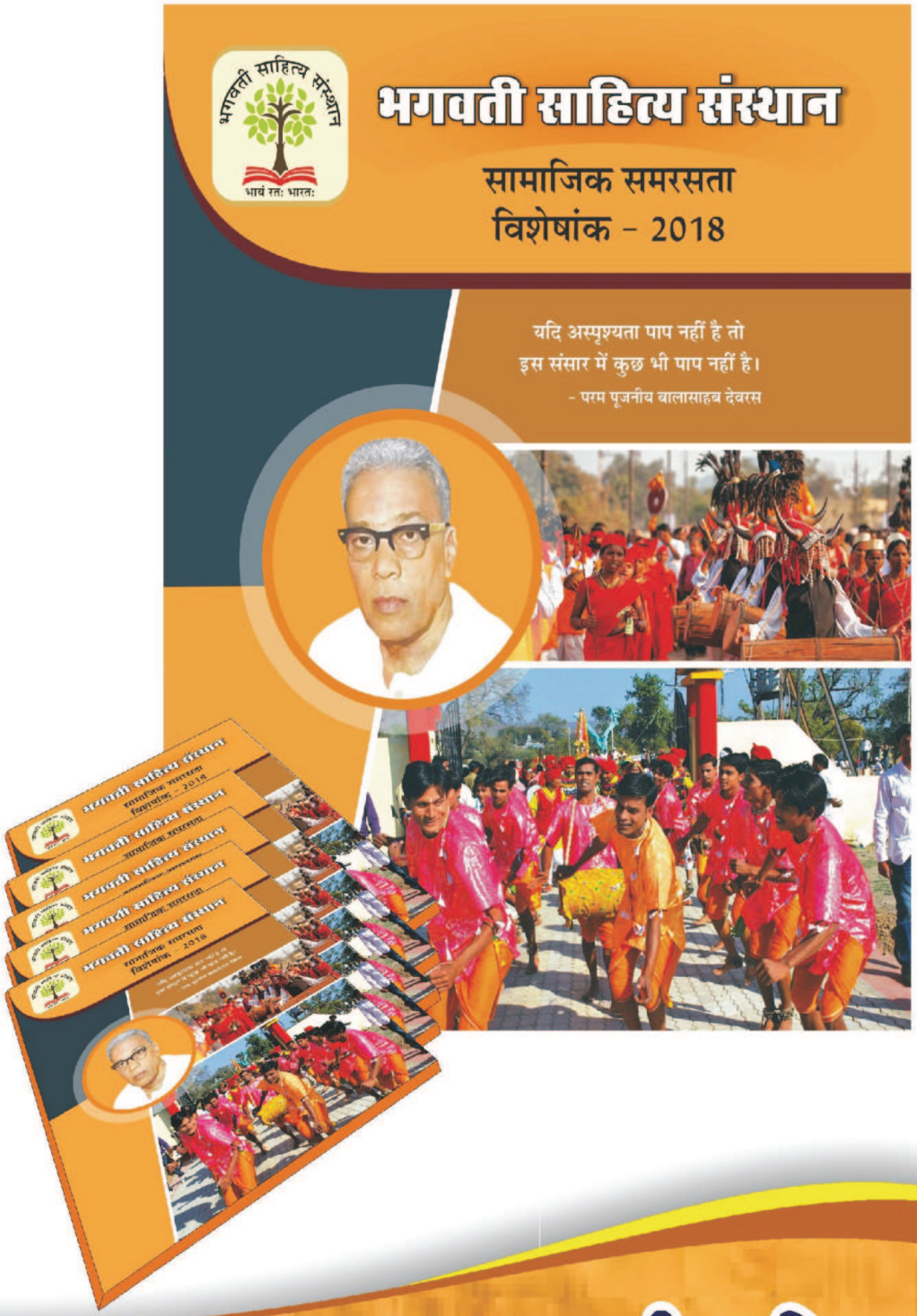

पढ़िए एवं
पढ़ाइए,
हर घर
पहुंचाइए

भगवती साहित्य संस्थान

स्वदेशी भवन, राम मंदिर मार्ग, रायपुर, छत्तीसगढ़

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

स्वामी दयानन्द सरस्वती
जयंती फाल्गुन कृ. १०, ०१ मार्च

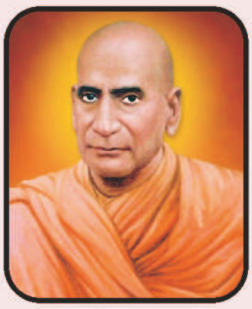

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
जयंती फाल्गुन कृ. १३, ०४ मार्च

स्वामी रामकृष्ण परमहंस
जयंती फाल्गुन शु. ०२, ०८ मार्च

कल्पना चावला
जयंती १७ मार्च

चैतन्य महाप्रभु जयंती
फाल्गुन शु. १५, २१ मार्च

छत्रपति शिवाजी जयंती
चैत्र कृ. ०३, २३ मार्च

राजगुरु
बलिदान दिवस २३ मार्च

सुखदेव
बलिदान दिवस २३ मार्च

भगत सिंह
बलिदान दिवस २३ मार्च

महादेवी वर्मा
जयंती २६ मार्च

प्रेषक,

शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - मार्च २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427